अपार

66

एक और पहलू

मजाज़

मजाज़ साहब शायद छह महीने से प्रकाश पडित के यहाँ क्याम फर्मा थे । आप सुबह-सबेरे, मुँह-अंधेरे उठकर प्रकाश पंडित की लिखने पढ़ने की मेज़ पर बैठकर बड़ी नियमितता से अपने दिन भर का प्रोग्राम कलमबद्ध करते थे - इस वक्त सुबह के पाँच बजे हैं। यहाँ से रेलवे स्टेशन जाकर (जो बहुत करीब था) चाय पीयूँगा । उसके बाद सलमा खुर्शीद (अब सलमा सिद्दीक़ी) आदिल मुनीर के यहाँ नाश्ता करूँगा । इसके बाद मुझे रवि चोपड़ा (उस समय सरकारी कर्मचारी थे, बाद में प्रगतिशील लेखकों से मेलजोल रखने और कलकत्ता पीस कांफ्रेस में शामिल होने के कारण हटा दिए गए थे।) के यहाँ जाना है। लंच वहाँ करूँगा। उसके बाद रेडियो पर फलां शख्स से मिलूँगा । उसके बाद फलां जगह शाम की चाय पीयूँगा - फिर फलां जगह .... लेकिन वास्तव में वह फलां जगह चाँदनी चौक की एस्प्लेनेड बार थी, जहाँ वह सुबह पाँच बजे ही पहुँच जाते थे और सड़क पर टहलना शुरू कर देते थे कि कब बार खुले और कब वह उसमें पदार्पण करें ।

प्रकाश पंडित उनके लिखे हुए प्रोग्राम के अनुसार उन्हें ढूँढने के लिए दिनभर फोन कर -करके टेलीफ़ोन आरपरेटर हो जाते, लेकिन मजाज़ साहब का कोई सुराग न मिलता । सुराग मिलता रात के दो या तीन बजे, जब कोई धर्म-योद्धा किस्म का जाँबाज़ उन्हें जैसे-तैसे लाद-ढोकर प्रकाश पंडित के घर पहुँचा जाता और मजाज़ साहब प्रकाश पंडित के बेडरूम का दरवाज़ा खटखटाकर कहते, ''कमाल है भई , अभी से सो गए।''

उसी बेडरूम का दरवाज़ा सुबह पाँच बजे फिर खटखटाया जाता और मजाज़ साहब की आवाज़ आती, 'कमाल है भई, अभी तक सो रहे हो !''

ऊपर लिखा किस्सा प्रकाश पंडित ने **ग़ुस्ताखियाँ** में लिखा है। मजाज़ की किताब की भूमिका में उन्होंने लिखा है मजाज़ से उनकी पहली मुलाकात कैसे हुई, पढ़ें -

मजाज़ से मिलने से पूर्व में मजाज़ के बारे में तरह तरह की बातें सुना और पढ़ा करता था और उसका रंगारंग चित्र मैंने उसकी रचनाओं में भी देखा था। विशेष रूप

शेष अंतिम भीतरी आवरण पर..

अक्षर

विचारशीलता और बौद्धिक हस्तक्षेप का उपक्रम

सम्पादक
प्रियंवद

उप सम्पादक
जीवेश प्रभाकर

वर्ष : 24 - अंक : 66
अप्रैल 2024

यह अंक
https://notnul.com
पर उपलब्ध है ।

एक प्रति	- 50 /- रु.
वार्षिक सदस्यता	- 250/- रु.
संस्थागत वार्षिक सदस्यता	- 400/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (व्यक्तिगत)	- 700/- रु.
तीन वर्ष की सदस्यता (संस्थागत)	- 900/- रु.
आजीवन सदस्यता (व्यक्तिगत)	- 2000/- रु.
संस्थागत आजीवन सदस्यता	- 3000/- रु.

(पत्रिका के समस्त सदस्यता शुल्क मे रजिस्टर्ड डाक खर्च सम्मिलित है।)

प्रकाशक : अकार प्रकाशन, B -204, रतन सैफ़ायर, 16/70, सिविल लाइन्स, कानपुर - 208001
ई मेल - akarprakashan@gmail.com
सम्पर्क :
प्रियंवद
B -204, रतन सैफ़ायर, 16/70, सिविल लाइन्स कानपुर - 208001
ई मेल - priyamvadd@gmail.com (मो.) 9839215236

जीवेश प्रभाकर :
69/2113, रोहिणीपुरम -2, रायपुर-492001 (छ.ग.)
ई मेल - jeeveshprabhakar@gmail.com मो. - 09425506574
आवरण :- जीवेश प्रभाकर
मुद्रक
सांखला प्रिंटर्स, विनायक शिखर, बीकानेर - 334003, फोनः - 0151-2242023
कम्पोज़िंग
विकल्प विमर्श, 87 निगम कॉलोनी, रायपुर - 492 001

सम्पादन व संचालन अवैतनिक । समस्त विवाद कानपुर न्याय क्षेत्र के अन्तर्गत होंगे । पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विचार सम्बन्धित लेखक के अपने हैं । सम्पादक अथवा प्रकाशक का उससे सहमत होना अनिवार्य नहीं है ।

आप 'अकार' के लिये धन राशि अपने क्षेत्र के 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी ब्रांच में जमा करा सकते हैं। 'अकार' के खाते के ब्यौरे नीचे दिए जा रहे हैं। आपको 'अकार' के खाते में राशि जमा कराने के लिये शुरू के चार ब्यौरों की जरूरत पड़ेगी। नेट द्वारा जमा कराने पर शेष दो ब्यौरे भी काम आएंगे।

Name of the Firm which Holds the bank Account :- AKAR PRAKASHAN
Bank Name :- Bank of Baroda, Bank Adress :- Panki, Site - 1, Kanpur - 208002.,
Bank Account No.- 09620200000089 MICR Code :- 208012012
IFSC Code :- BARB0PANKIX (0 is ZERO, NOT ALPHABETICAL O)

अनुक्रम

1. **अकथ :** मैं भी बुतशिकन होना चाहता हूँ । - *प्रियंवद* 06

2. **तिनका-तिनका :** कितने-कितने पहचान परेड! - *प्रकाश चंद्रायन* 23

3. **समीक्षा लेख :** जिन्ना : सफलता या सार्थकता - *नंदकिशोर आचार्य* 31

4. **लेख :** स्मृतियों में सिनेमा-4
सिनेमा की त्रिमूर्ति का तीसरा अधिनायक - *जितेन्द्र भाटिया* 39

5. **स्मरण** : कवि विजेंद्र : एक स्मृति-यात्रा - *जीवन सिंह* 64

6. **ख़ाका** : जिगर मुरादाबादी - *शाहिद अहमद देहलवी* 77
(लिप्यंतरण - ज़ाहिद ख़ान)

7. **आत्मकथ्य** : कुछ बातें कुछ यादें ! (चौथी क़िस्त)
- *कमल किशोर श्रमिक* 88

8. **शहरनामा** : किस्सों का शहर : मुज़फ़्फ़रपुर - *वीरेन नंदा* 103

9. **ज़िंदगीनामा :** अपने शहर का पैदल यात्री : मनमोहन - *सतीश नूतन* 123

मैं भी बुतशिकन होना चाहता हूँ ।

'नेहरू बेनकाब', 'गांधी बनेकाब' और 'ग़ालिब बेनकाब' लिखने वाले हंसराज रहबर के बारे में उन दिनों एक बात मशहूर थी, कि वह अपनी जेब में उन लेखकों की एक फेहरिस्त रख कर घूमते हैं जिन्हें क्रांति के बाद गोली से उड़ा दिया जाएगा। देश में जब वह कहीं जाते लोग उनसे आकर कहते, 'मैं तो तुम्हारा दोस्त हूँ रहबर। मेरा नाम उस फेहरिस्त से हटा दो न।' रहबर कुछ देर चुप रहने के बाद कहते, 'सोचूँगा, पर वादा नहीं करता'। कभी किसी को जवाब मिलता, 'मैं कीड़ों मकौड़ों को मारने में विश्वास नहीं रखता'।

रहबर की ऊपर की तीनों किताबों में कितना तथ्य, कितनी गम्भीरता, कितना विश्लेषण या अनुसंधान है, कहना कठिन है, लेकिन इतना जरूर है कि यह कहने वालों की तादाद अच्छी खासी है, कि इन तीनों की नकाबकुशाई करने में रहबर ने खुद को भी बेनकाब कर दिया है । किसी चरित्र को सम्पूर्णता में न देखकर तथ्यों को अपने मतलब के नज़रिए से चुनना और उसकी नींव पर मनचाही इमारत खड़ी करना, बहुत गम्भीर और ईमानदार लेखन नहीं है। कमोबेश ये तीनों किताबें ऐसी ही हैं। तब भी, इन तीनों को बेनकाब करने वाली किताब लिखना ही, अपने आप में रहबर की एक ऐसी रग के जिंदा होने की गवाही तो है ही, जो जब तब, कहीं भी, किसी के ख़िलाफ़ बेकाबू तरीके से फ़ड़क सकती थी । किसी को कोई मुरव्वत न बख़्शने वाले रहबर की शख़्सियत के इस पेचीदा पहलू को बेहतर ढंग से उजागर करने के लिए फिलहाल, तो प्रकाश पंडित की 'गुस्ताखियाँ' का यह एक किस्सा काफी है ।

इन दिनों तो हंसराज 'रहबर' ने 'ग़ालिब बेनकाब', 'नेहरू बेनकाब' और 'गांधी बेनकाब' लिखकर अपने आपको और भी बेनकाब कर लिया है, लेकिन यह उन दिनों की बात है जब उन्होंने मुंशी प्रेमचंद पर एक बहुत अच्छी पुस्तक लिखी थी और इसीलिए, लखनऊ की एक साहित्यिक सभा में उनसे मुंशी प्रेमचंद पर अपने विचार प्रकट करने की प्रार्थना की गयी थी। मुंशी प्रेमचंद के बारे में अभी उन्होंने दो-तीन वाक्य ही कहे थे कि न जाने कैसे उन्हें कृष्णचंदर की याद आ गयी और कृष्णचंदर के अनादि काल के शत्रु रहबर ने ताबड़-तोड़ कृष्णचंदर को बेनकाब करना शुरू कर दिया । आधा